

---

# Shri Sarasvati saptakam

---

## श्रीसरस्वतीसप्तकम्

---

### Document Information



---

Text title : Sarasvati Saptakam

File name : sarasvatIsaptakam.itx

Category : devii, devI, saptaka, sarasvatI

Location : doc\_devii

Author : Ramakripalu Dvivedi

Transliterated by : Deepakshi Kumar

Proofread by : Deepakshi Kumar

Latest update : August 12, 2021

Send corrections to : [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

August 13, 2021

*sanskritdocuments.org*

---



श्रीसरस्वतीसप्तकम्



विहसन्ती वरवदने ! रतिमतिमेधां च सुधां च विकिरन्ती ।  
अज्ञानावृतगात्रं स्वकृपापात्रं विधेहि मामीशे ॥ १ ॥

वितरन्ती शं, वादं वाचि, विषादं विनाशय चज्ञानम् ।  
वितरापूर्वाह्लादं, जहि मत्तिसादं प्रसीद वागीशे ! ॥ २ ॥

कलयन्ती हृदि हारं हीरकसारं प्रभां प्रवर्षन्ती ।  
रचय स्वीयविहारारागारं हृदयं मदीयमयि धीशे ! ॥ ३ ॥

दीनोद्धारं कारं मातः ! पारं नयाशु विनतोऽहम् ।  
दुर्वृत्तीनां कदनं कुरु मे वदनं सदा स्वकं सदनम् ॥ ४ ॥

अर्पय सदयां दृष्टिं सपदि समर्पय च शास्त्रसम्बोधम् ।  
सन्तर्पय मम चान्तर्वरदे ! वरदेवि ! पाहि दासस्ते ॥ ५ ॥

सार्तस्वराणां त्वमु चेन्न मातः !  
कार्तस्वराब्जासनसन्निविष्टे !  
अज्ञाननाशं कुरुषे स्वकानां,  
का नाम वामा न पुनश्च शक्तिः ॥ ६ ॥

मातस्त्वदीयपदपङ्कजकल्पिताशो,  
दासोऽस्मि ते च जगतो नितरां निराशः ।  
सद्यः प्रसीद शरणे तव बद्धपाशः  
क्रन्दामि मेऽपि तनुतां हृदि सत्प्रकाशम् ॥ ७ ॥

इति रामकृपालु द्विवेदी साहित्याचार्यस्य विरचितं  
श्रीसरस्वतीसप्तकं सम्पूर्णम् ।

*Shri Sarasvati saptakam*

pdf was typeset on August 13, 2021

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

